आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2520 • उदयपुर, गुरुवार 18 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चल पड़ी थमी हुई जिन्दगी

नरवाणा– हरियाणा के जींद जिले के नरवाना शहर में निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। संस्थान की नरवाना शाखा के तत्वावधान में सम्पन्न शिविर में 37 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर तथा 25 को कैलीपर लगाए गए। मिलन पैलेस में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि महंत श्री अजयगिरि जी महाराज थे। अध्यक्षता नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जय सिंह जी गर्ग, श्री प्रवीण जी मित्तल व राकेश जी शर्मा मंच पर बिराजे थे। स्थानीय शाखा के प्रभारी श्री राजेन्द्र जी गर्ग ने अतिथियों का स्वागत किया। कृत्रिम अंग लगाने का कार्य संस्थान के टेक्नीशियन श्री भंवरसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने किया। संचालन श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने जबकि व्यवस्था में श्री मुन्नासिंह जी, भरत कुमार जी व रामसिंह जी ने सहयोग किया।

छतरपुर– केयर इंग्लिश स्कूल, छतरपुर (मध्यप्रदेश) में आयोजित शिविर में 39 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 9 को कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार जी अवस्थी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में उनके साथ मंच पर रॉटरी क्लब

के सचिव श्री स्वतंत्र जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश जी सोनी, इनव्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती ज्योति जी चौबे समाजसेवी श्री पंकज कुमार जी, व श्री उमेश जी ललवानी मौजूद थे। अध्यक्षता रॉटरी क्लब के अध्यक्ष श्री मुकेश जी चौबे ने की।

गुरुग्राम– वैश्य समाज की सेक्टर–4

स्थित धर्मशाला में सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर से बड़ी संख्या में दिव्यांग भाई–बहन लाभान्वित हुए। मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री विशाल जी नागदा के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को बैसाखी जोड़ी प्रदान की गई। जबकि 10 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाने के लिए मेजरमेंट लिया गया। चार दिव्यांगों का पोलियो सुधार के लिए निःशुल्क ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। शिविर की अध्यक्षता समाजसेवी श्री रघुनाथ जी गोयल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंगला थे। दिव्यांगों का चयन डॉ. एस. एल. गुप्ता, टेक्निीशियन नाथूसिंह जी व किशनलाल जी ने किया। अतिथियों का स्वागत स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री गणपत जी रावल ने जबकि संचालन श्री अखिलेश अग्निहोत्री ने किया।

कांगड़ा– हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के ज्वालाजी नगर में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। मातृ सदन सरस्वती विद्यालय परिसर के निकट सम्पन्न शिविर में 28 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) तथा 40 के पांवों में कैलिपर लगाए गए।

टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैष्णव व श्री किशन जी लौहार ने माप के अनुसार कृत्रिम अंग फिट किए। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार जी धूमल थे। अध्यक्षता राज्य के पूर्व मंत्री श्री रमेश जी घवाला ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नारायण सेवा संस्थान की हमीरपुर शाखा के संयोजक श्री रसीलसिंह जी मानकोटिया, पत्रकार श्री संजय जी जोशी, पूर्व मंत्री श्री रवीन्द्र जी रवि, समाजसेवी श्री पंकज जी शर्मा व श्री रामस्वरूप जी शास्त्री मौजूद थे। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने अतिथियों का स्वागत एवं श्री रमेश जी मेनारिया ने आभार व्यक्त किया।

शुक्रिया नारायण सेवा संस्थान का

उसे जिद्द थी दुनिया बदलने की। पर वो नहीं बदल पाया। उसने हार नहीं मानी और खुद की दुनिया बदल दी। चेहरे पे अपनी स्थित तेज लिये हुए ये है तेजाराम। वे कहते है–

मेरा नाम तेजाराम है, ग्राम बडाईली है, जिला नागौर, राजस्थान। मैं बचपन से पोलियों ग्रसित था। खेलने – कूदने के लायक भी नहीं था। और उसके अलावा में मम्मी– पापा पे बोझ बनकर रहता था। कि मैं दूसरी जगह भी चल नही पाता था। पांव बिल्कुल मुड़ा हुआ था। दोस्त और पड़ोसी सब ताने मारते थे। बेसहारा है ये कुछ भी मतलब नहीं है मर जाये तो ठीक है।

पोलियो ने इनसे बहुत कुछ छीना। मगर मिली तो लोगों की उपेक्षा या दुत्कार। और उसकी जिन्दगी में उजाला आना बाकी था। वो आया नारायण सेवा संस्थान बनकर। नारायण सेवा संस्थान का नागौर का कैम्प लगा था। एड्रेस मालूम चला कैम्प के द्वारा। उदयपुर जा के ऑपरेशन किया था। तीन जगह पे मैं और मेरे पापा दोनों ही उधर रहे थे छः महीने तक। तो भी एक पैसा भी नहीं लगा था। नहीं ऑपरेशन का लगा, मैं गरीब घर का हूँ। कहीं पे दूसरे प्राईवेट जगह पे ऑपरेशन नहीं करवा सकता था। अच्छा हुआ अभी चलने लायक हो सका।

नारायण सेवा संस्थान ने तेजाराम को इस काबिल बनाया कि वो अपनी मंजिल की तरफ कदम बढ़ा सके। वहां पे इतना अच्छा स्टॉफ था। डॉक्टर सब इतने अच्छे थे और प्रशान्त जी सर दिन में हमको एक बार मिलकर जाते थे। छः महीने तक मैं वहां पे रूका था। तो भी वहां पर कोई फैमिली वाले या गांव के या दोस्तों की किसी की याद नहीं आई।

सिर्फ यही नहीं संस्थान ने उसकी योग्यता को निखारा। और मेरे को यहां पर कम्प्युटर की ट्रेंनिग दिया गया। बिल्कुल निःशुल्क फिर उसके बाद मेरे शहर में ही बीएसएनएल कॉल सेन्टर में मेरी जॉब लग गया।

तेजाराम अब बीएसएनएल कॉल सेन्टर में अब अपनी समस्या भूलकर लोगों की समस्याएं सुलझाता है। मैं अजमेर में रहता हूँ। अब बीएसएनएल कॉल सेन्टर में जॉब करता हुँ, बास और स्टॉफ वाले सब खुश है मेरे से। अब में मेरे परिवार का पालन – पौषण कर रहा हूँ और मेरा परिवार पूरा खुश है।

तकलीफें छूट गई और चेहरा मुस्कराने लगा। संस्थान का मैं इतना आभारी हूँ। नारायण सेवा संस्थान को शुक्रिया कहने के लिए तेजाराम के पास शब्द नहीं है। और उसकी निशब्द मुसकान बहुत कुछ कहती है। एक नहीं हजार शुक्रिया, बस शुक्रिया।

संस्थान की आगामी पांच वर्ष : योजना

1,40,400 शल्य चिकित्सा
संस्थान द्वारा किये जाने वाले ऑपरेशन में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य।

1,87,200 सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण
25 प्रतिशत सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण ज्यादा होगा।

46,800 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण
10 प्रतिशत कृत्रिम अंग ज्यादा बनायेंगे।

510 दिव्यांग जोड़ों की बसेगी गृहस्थी
सन 2026 तक 10 सामूहिक विवाह समारोह का होगा आयोजन।

250 एनजीओ को लेंगे गोद
प्रतिवर्ष 50 छोटी एनजीओ को देंगे आर्थिक मदद।

एनसीए होगा उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत
सन 2026 में प्रतिवर्ष 1000 निर्धन एवं आदिवासी बच्चे पढ़ेंगे।

22,46,400 रोगियों की निःशुल्क फिजियोथैरेपी चिकित्सा
25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की जायेगी।

निःशुल्क मोबाईल रिपेयरिंग, सिलाई, कम्प्युटर एवं फिजियोथैरेपी केन्द्र का शुभारम्भ
2026 के अंत तक संस्थान 82-82 अतिरिक्त केन्द्रों का संचालन करेगा।

सम्पूर्ण भारत में 62 पी एण्ड ओ वर्कशॉप केन्द्र का शुभारम्भ
2026 के अंत तक 62 केन्द्रों का अतिरिक्त संचालन किया जायेगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मैं आपको निवेदन कर रहा था चित्तौड़ से शुभारम्भ हुआ था। पोलियो को प्रशांत रूपी महासागर में फेंकना। रोटरी क्लब को बहुत धन्यवाद है। सभी स्वयंसेवी संस्थाओं को धन्यवाद हैं। नारायण सेवा ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। और वर्षों तक नारायण सेवा का पोलियो ड्रोप्स, नारायण सेवा के सेवाधाम में। आपकी अपनी नारायण सेवा, ये पराई नहीं है। ये शरीर मेरा पराया है। ये शरीर मेरा अपना नहीं है।

शरीर मेरा होता तो इस सहस्त्रार चक्र में यदि कोई गांठ होती तो में तुरन्त निकाल देता। नहीं निकाल सकता। और अरबों नसों के बीच में एक गांठ को सर्जन यदि अच्छी तरह से नहीं निकाल पाये और दूसरी नस कट जाये तो आदमी विक्षिप्त हो जाता है।

हमने देखा है, मैं नाम नहीं लूंगा। मैंरे परम् मित्र जो कहते थे–ब्रेड बटर मिल जाय बस, ब्रेड बटर मिल जाय, भीलवाड़ा रहते थे। उनके माथे में कुछ दर्द रहने लगा। मैंने खुद ने एक डॉक्टर साहब के यहाँ बताया था।

बरसों पहले की बात है वो समझ नहीं पाये। उन्होंने कहा– मेडिसन ले लीजिए। दर्द बढ़ता गया दिल्ली गये। ऑपरेशन कराया गया। एक छोटी सी मटर के बराबर गांठ का ऑपरेशन कराया। लेकिन पास की अरबों–खरबों नसों में से एक दूसरी नस दब गई। वो विक्षिप्त हो गये।

पहचानने से इन्कार करने लग गये। और गाली– गलोज करने लगे। मैंने देखा–मान–अपमान करने लगे।

मान और अपमान जिनके
दोनों ही एक समान है।
वो सच्चा इन्सान है,
धरती का भगवान है।।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

सम्पादकीय

हमारे देश की आदिकालीन परम्परा है जयघोष की। तब से अब तक प्रत्येक शुभ कार्य में जो घोष लगते हैं वे हैं –'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।'

ये चार जय घोष नहीं वरन् भारतीय संस्कृति व सभ्यता के मानक हैं। धर्म व अधर्म का भेद सभी जानते हैं। धर्म का आशय यहाँ किसी मत, पंथ, संप्रदाय या पूजा पद्धति से न होकर नैसर्गिक धर्म से हैं। परमात्मा के गुणों का मानवीकरण ही धर्म है, इसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, करुणा, परार्थ आदि भावों का समावेश है। अधर्म इसका विपरीत है, अतः कामना यही की जाती है कि अधर्म का नाश हो। यहाँ अधर्म की पराजय नहीं कहा है, जय की तुक में पराजय इसलिये नहीं कहा है कि पराजित होने पर भी अस्तित्व तो रहता ही है। हमारी संस्कृति किसी भी रूप में अधर्म को स्वीकार नहीं करती है। हर प्राणी सद्भावना से जीये तथा समस्त विश्व का कल्याण हो। यही भाव 'वसुधैव कुटुम्बकं' में भी परिलक्षित होता है। इसलिये इन्हें केवल घोष नहीं मानकर संस्कृति के सूत्रों के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहिये।

कुछ काव्यमय

मानवीय गुणों का संचय,
मानवता का पालन।
मानव कल्याण का भाव
और मानव-मन संचालन।
ये भले कठिन हो
पर अनिवार्य है।
इनके बिना मानव।
किसे स्वीकार्य हैं ?

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

समभाव

सुमित्रा जी बोली न जीजीबाई न, ये बातें मत करो।

वीर न अपना देते हैं,
न वे औरों का लेते हैं।
वीरों की जननी हम है,
भिक्षा हमें मृत्यु सम है
हम तो वीरों की माता है।
लक्ष्मण की तरफ देखा।
लक्ष्मण शांत रहोगे तुम,
तुम शेषावतार लक्ष्मण जी
मंजली माँ तूं मरी न क्यों
लोक लाज से डरी नहीं क्यों।
वो लक्ष्मण जी ने सोचा
माँ क्या करूँ कहो मुझसे;
क्या है कि जो न हो मुझसे।
अंगीकार आर्य करते,
तो कब के द्रोही गरते।
आज्ञा करें आर्य अब भी,
बिगड़ा बने कार्य अब भी।
लक्ष्मण ने प्रभु को देखा,
न थी उधर कोई रेखा।
बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय।
गर्यादा पुरुषोत्तम भगवान की जय।

भगवान के चेहरे पर कोई तनाव नहीं, कोई गुस्सा नहीं। बोली माँ ये घर की बात है, घर में घर की शांति रहेगी। कुल में कुल की क्रांति रहे। भैया भरत अयोग्य नहीं। राम भगवान की कृपा प्राप्त करे। माला जितनी आप फेर रहे हो बहुत अच्छा। राम नाम की पुस्तिका भी आती है, कॉपियाँ भी आती है। मेरे पूज्य जीजाजी अमृतसर में राम– नाम लिखते थे, कॉपियाँ की कॉपियाँ भर दी, दुकान में

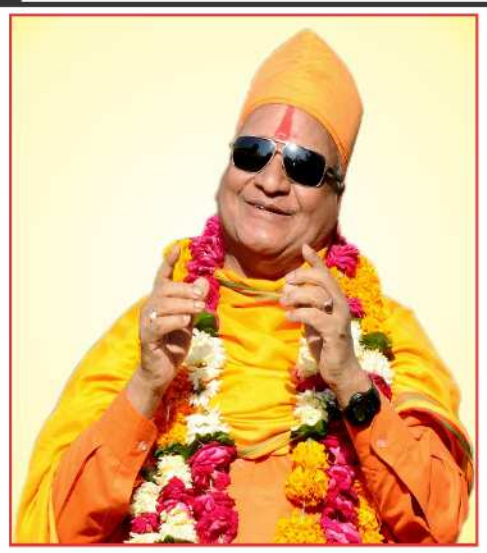

रहती थी, सिखों के खालिस्तान के नाम से नालायक लोगों ने बहुत हिंसा की थी। उस समय 12 दुकानें एक लाईन में थी, 11 दुकानों को आग लगा दी। और 12 वीं दुकान के पास आये बोले चलो। दूसरी तरफ चलो केवल एक दुकान बच गई। ये राम नाम की पोथी की महिमा है, ऐसे राम भगवान बोले– भैया भरत अयोग्य नहीं, राज्य राम का भोग्य नहीं। फिर भी वह अपना ही है, यों तो सब सपना ही है।। चार पंक्ति ने तो मेरा मन मोह लिया। ये बात मैं साकेत का स्वाध्याय करने की निवेदन कर रहा हूँ।

1976 में जब पूज्य राजमल जी भाई साहब के सम्पर्क में आया। उनके आँखों के शिविरों में जाया करता था। बस स्टेण्ड जाता। रास्ते में ऑटो चलता रहता और मैं कुछ लाइनें पढ़ता रहता फिर बस में बैठते बस में भी लाईट रहती थी या दिन का टाईम रहता तो लाईट ऐसे भी रहती थी। बस चलती रहती। मैं पढ़ता रहता राम–भरत में भेद नहीं, भैया भरत अयोग्य नहीं। और राज्य राम का भोग्य नहीं। राजा रामचन्द्र जी इसलिए नहीं आये। भोग भोगना है। भोग–भोगने के लिए देह नहीं मिली। ये देह क्षमता भाव की दृष्टि के लिए मिली है– लाला! ये किडनी अपना कार्य करती आ रही है। ये आपकी –हमारी आज्ञा में नहीं है। किडनी में इन्फेक्शन हो जावे तो रात के तारे दिन को नजर आने लग जाते है। डाईलीसीस करना पड़ता है। लाखों भाई हमारे डाईलीसीस करवा रहे हैं। मंगल हो वो ठीक हो जावे, उनके स्वास्थ्य की अच्छी कामना करते है। परन्तु ये हमारा शरीर जिसको शरीर कहते है, वो मेरा नहीं है। ये मैं कहता हूँ। मेरी ध्वनि मेरी नहीं है, ये बखान मेरा नहीं है। क्या मेरा है? ये मैं कितनी भी चीजे बता दूं ये तो आप भी बता सकते हैं। एक चीज मैं बताऊंगा। आप दो बता सकते हैं, आप बहुत–बहुत सयाने है।

धर्म को जीवन में धारण कर लें। कहते हैं न भोजन वही अच्छा जो पच गया। कहते है न, जो शरीर को लगा वो अपना उसी से रक्त बनेगा। ये स्टमक, ये आमाशय सब भगवान ने दिये है। इन पर हमारा कोई वश नहीं चलता, हमारा वश चलता है, अपनी जीह्वा पर, एक दाना भी श्रीमुख में प्रवेश करावे तो सोचें ये दाना मेरे देह में जाकर क्या करेगा? यदि मेरे देह में जाकर के अच्छा पोषण करेगा। यदि स्टमक इसको पचा लेगा। लीवर 550 तरह के रसायन बना लेगा। ये रक्त में मिल जायेगा। रक्त मेरे शरीर में दौड़ेगा, मुझे ऊर्जा मिलेगी। मुझे ज्ञान मिलेगा केवल ऊर्जा की देह धारा होती है।

–कैलाश 'मानव'

निर्मल मन वाला ईश्वर को पंसद है

मीरा को विष का प्याला दिया गया था। मीरा ने उसे पी लिया, लेकिन उस विष को, प्रेम ने अमृत बना दिया। उसे काँटों की सेज पर सुलाया गया, लेकिन प्रभु–प्रेम के चलते, वह भी फूलों की सेज में बदल गई। एक बार भगवान श्रीराम ने हनुमान जी को मनकों की माला उपहार में दी। हनुमान जी हाथ में लेते ही उसके एक–एक मनके को तोड़कर उसमें कुछ ढूंढने लगते हैं।

भगवान श्रीराम ने पूछा कि इसमें क्या

ढूंढ रहे हो हनुमान? हनुमान जी ने कहा– प्रभु ! यह माला मेरे लिए किसी काम की नहीं, क्योंकि इसमें आपका नाम और दर्शन नहीं। पास खड़े किसी भक्त ने पूछ लिया कि हनुमान जी आप में राम कहाँ है। हनुमान जी ने कहा कि मेरे रोम–रोम में श्रीराम हैं और यह कहकर हनुमान जी ने उसी समय छाती फाड़कर, भगवान श्रीराम व सीताजी के दर्शन करा दिए। इसी तरह भक्ति प्रगाढ़ होनी चाहिए। अटूट–अखण्ड भक्ति ही व्यक्ति का प्रभु से मिलन कराती है। प्रह्लाद को हिरण्यकश्यप ने नाना प्रकार के दुःख दिए, लेकिन हर दुःख में परमात्मा की भक्ति थी, प्रभु श्रीविष्णु की भक्ति थी। इसलिए प्रह्लाद का हर दुःख, सुख में तब्दील हो गया। होलिका (प्रह्लाद की बुआ) को अग्नि में न जलने का वरदान प्राप्त था। किंतु वह भी जब प्रभु के परम भक्त प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में बैठी, तो उसका दहन हो गया, किन्तु प्रभु–भक्त बालक प्रह्लाद को कुछ नहीं हुआ। ये भक्ति का चमत्कार है। जब भगवान के साथ भक्त इस तरह एकाकार हो जाता है तो भक्त, भक्त नहीं रहता, वह भगवान का ही हो जाता है। इसलिए भगवान का होने के लिए वे सब चीजें करनी पड़ेगीं, जो भगवत् प्प्ति के लिए जरूरी हैं। शबरी में लोभ नहीं था, लालच नहीं था, ईर्ष्या नहीं थी, वैमनस्य नहीं था, द्वेष नहीं था, किसी की निंदा नहीं करती थी, किसी को आलोचना नहीं करती थी। उसके पास धन नहीं था, वैभव नहीं था, वर्चस्व नहीं था, किंतु उसका हृदय निर्मल था, वह किसी को दुःख, पीड़ा, कष्ट नहीं देती थी। वह किसी की व्याधि का कारण नहीं बनती थी। उसने तो केवल एक ही काम किया, भगवान को सच्चे हृदय से प्रेम किया।

आज के परिवेश में यदि विचार करें, तो भगवान तब मिलेंगे, जब आप घर में बच्चों को प्रेम दे सकें, पिता की आज्ञाका पालन करें, पड़ोस का बच्चा भूखा हो तो आप उसे रोटी खिला सकें। किसी पड़ोसी की निंदा न करें, आलोचना न करें। किसी के भी प्रति ईर्ष्या व द्वेष की भावना न हो। बेशक आप मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, मत जाइए। आपके हृदय के अन्दर स्वच्छता है, निर्मलता है, आप किसी का बुरा नहीं चाहते, सबके प्रति प्रेम–स्नेह की भावना रखते हैं, अपने धन का सर्वथा सदुपयोग करते हैं तो आपको भगवान के दर पर जाने की आवश्यकता नहीं है, भगवान स्वयं आपके द्वार आकर आपको गले से लगा लेंगे।

शबरी राम के दरबार में गई थी क्या? विदुर की पत्नी कृष्ण के दरबार मे गई थी क्या? राम, कृष्ण दौड़े चले गए, उन दोनों के घरों में। वे केवल प्रेम के वशीभूत होकर नहीं गए, बल्कि उन दोनों का ही हृदय बहुत निर्मल और स्वच्छ था। इतना स्वच्छ कि भगवान दौड़े चले गए उस हृदय की ओर। एक बात सत्य है, यदि परमात्मा को प्राप्त करना है तो अपनी कमियों को दूर करना पड़ेगा। हमारे हृदय से निर्मलता की सुगन्ध आनी चाहिए। कहते हैं – भजन करे पाताल में, तो प्रकट भई आकाश, दाबी–दूबी ना दबे, कस्तूरी की बास। भजन पाताल में करो, मुँह से आवाज न आए, लेकिन उन भजनों में उस स्वच्छ–निर्मल हृदय से निकली हुई प्रार्थना से भगवान भी प्रकट हो जायेंगे। इसके विपरीत आप खूब चिल्लाओ, बहुत अरदास करो, जोर–जोर से भजन गाओ, लेकिन हृदय स्वच्छ नहीं है तो भगवान सुनेंगे भी नहीं। भगवान को चिल्लाना पसन्द नहीं है, भगवान को तो निर्मल हृदय पसन्द है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

उदयपुर में उस जमाने में कोई एयर कण्डीशन्ड ऑपरेशन थियेटर उपलब्ध नहीं था। पोलियो ऑपरेशनों के लिये यह बहुत जरूरी था। फतहपुरा पर डॉ.भण्डारी का त्रिवेणी हॉस्पीटल है। उनका ऑपरेशन थियेटर किराये पर लेने की सोची। डॉ.भण्डारी से आग्रह किया कि हम थियेटर में ए. सी. लगवा दें तो क्या वे रोगियों के ऑपरेशन शुल्क में इसका समायोजन कर लेंगे। डॉ. भण्डारी भी अत्यन्त उदार एवं सहयोगी प्रकृति के थे। उन्होंने खुशी–खुशी कह दिया कि हॉस्पीटल आपका है। जैसे आप चाहेंगे कर देंगे।

सारी व्यवस्थाएं हो जाने के बाद मुम्बई के डॉ. शाह को बुला लिया। उन्होंने 20 बच्चों के ऑपरेशन किये। उनके हाथ में 50 हजार रुपये रखे तो उन्होंने खुशी खुशी स्वीकार कर लिये। इस सफलता के बाद अपने स्वयं के अस्पताल की व्यग्रता और बढ़ गई।

शीघ्र ही नये मिले प्लोट पर पोलियो हॉस्पीटल के नाम से निर्माण कार्य शुरु करवा दिया। 1994 चल रहा था। निर्माण का सारा पैसा चैनराज दे रहे थे इसलिये कैलाश को कोई तनाव नहीं था। साल भर में ही अस्पताल के तीन–चौथाई भवन का निर्माण हो गया। चैनराज स्वयं तो धन दे ही रहे थे अपने रिश्तेदारों से भी जुटा रहे थे। इसी सिलसिले में वे कैलाश को लेकर चेन्नई गये। वहां उनके साढू रहते थे। वे भी अत्यन्त धनशील और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होंने अच्छी मदद की। वहां से लौटते समय चैनराज तो मुम्बई रूक गये और कैलाश उदयपुर लौट आया।

अंश - 161

क्या होगा, यदि.... कोई मल्टी विटामिन ज्यादा मात्रा में ले तो

अक्सर कुछ लोग हल्की थकान, या फिर कोई बीमारी के बाद बिना डॉक्टरी सलाह के मल्टी विटामिन्स सप्लीमेंट लें लते हैं। यदि आपको यह आदत है तो इस पर ध्यान देने की जरूरत है। कई बार इन सप्लीमेंट का कोई फायदा नहीं होता है, बल्कि इसके दुष्प्रभाव भी देखने को मिलते हैं।

सही पाचन जरूरी

कमजोरी होने पर जब भी कोई बिना डॉक्टरी सलाह के मल्टी विटामिन्स लेता है तो जरूरी नहीं है कि उसका लाभ ही मिले। इनका उपयोग पाचन तंत्र को सही होने पर ही करना चाहिए। अगर पाचन तंत्र सही होने पर ही करना चाहिए। अगर पाचन तंत्र खराब है तो इन्हें लेने का कोई फायदा नहीं होगा। पाचक अम्ल की कमी से भोजन भी नहीं पचता है जिससे शरीर में पोषकता की कमी हो जाती है। ऐसे में जब कोई मल्टी विटामिन्स लेगा तो शरीर को उसका लाभ भी नहीं होगा।

दुष्प्रभाव भी होते

किसी दवा या सप्लीमेंट के ओवरडोज से सेहत को नुकसान हो सकता है। विटामिन सी की अधिकता, बाल झड़ने की समस्या के साथ मतली या तंत्रिका तंत्र को नुकसान पहुंचा सकती है। अतः बिना डॉक्टरी सलाह न लें।

पानी में घुलनशील

विटामिन्स भी दो तरह के होते हैं। पहले, पानी में घुलनशील जिनमें विटामिन बी और सी होते हैं। इनकी शरीर में अधिक मात्रा यूरिन के रास्ते बाहर निकल जाती है, इसलिए इनका नुकसान कम होता है।

फैट में घुलने वाला :विटामिन्स ए, डी, ई व के फैट में घुलनशील होते हैं। इनकी अधिकता शरीर में होती है जो नुकसानप्रद है। ज्यादा ए व डी से कैंसर भी हो सकता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

एक दिन बृज नारायणजी 'तिलक' मिले तो बड़े प्रसन्न होकर करने लगे– कैलाशजी, अपने भीलवाड़ा के भाग्य जगे हैं कि यहाँ आदरणीय राममनोहरजी लोहिया के आने का कार्यक्रम बना है। मुझे भी बड़ी खुशी हुई कि जिनके बारे में अखबारों में पढ़ते थे, रेडियो पर सुनते थे, उन्हें प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिलेगा। नियत कार्यक्रमानुसार डा. लोहियाजी का आगमन हुआ। हम सब उनके साथ बनेड़ा गये। शायद श्री उमरावमलजी ढाबरिया के घर उनको ठहरना था, वहीं पर भोजन भी था। मैं भी उन 8–10 लोगों के दल का एक सदस्य था। मेरी राजनीति में तो रुचि नहीं है पर समाज नीति में पूरी रुचि है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये उनके प्रयासों का मैं बड़ा प्रशंसक था।लोहियाजी के बंगले पर दिल्ली में ही परम विद्वान व पत्रकार डॉ वेदप्रताप वैदिक भी रहा करते थे। वैदिकजी ने अपना पी. एच.डी. का शोधपत्र हिन्दी में लिखा था। उस समय शोधपत्र अंग्रेजी में ही स्वीकार किये जाते थे अतः इनका शोधपत्र अस्वीकार हो गया। तब वैदिकजी ने इसके खिलाफ आवाज उठाई। डॉ. राममनोहर लोहियाजी और उनके सोशलिस्ट साथियों ने संसद में भी यह सवाल उठाया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 288 (कैलाश 'मानव')

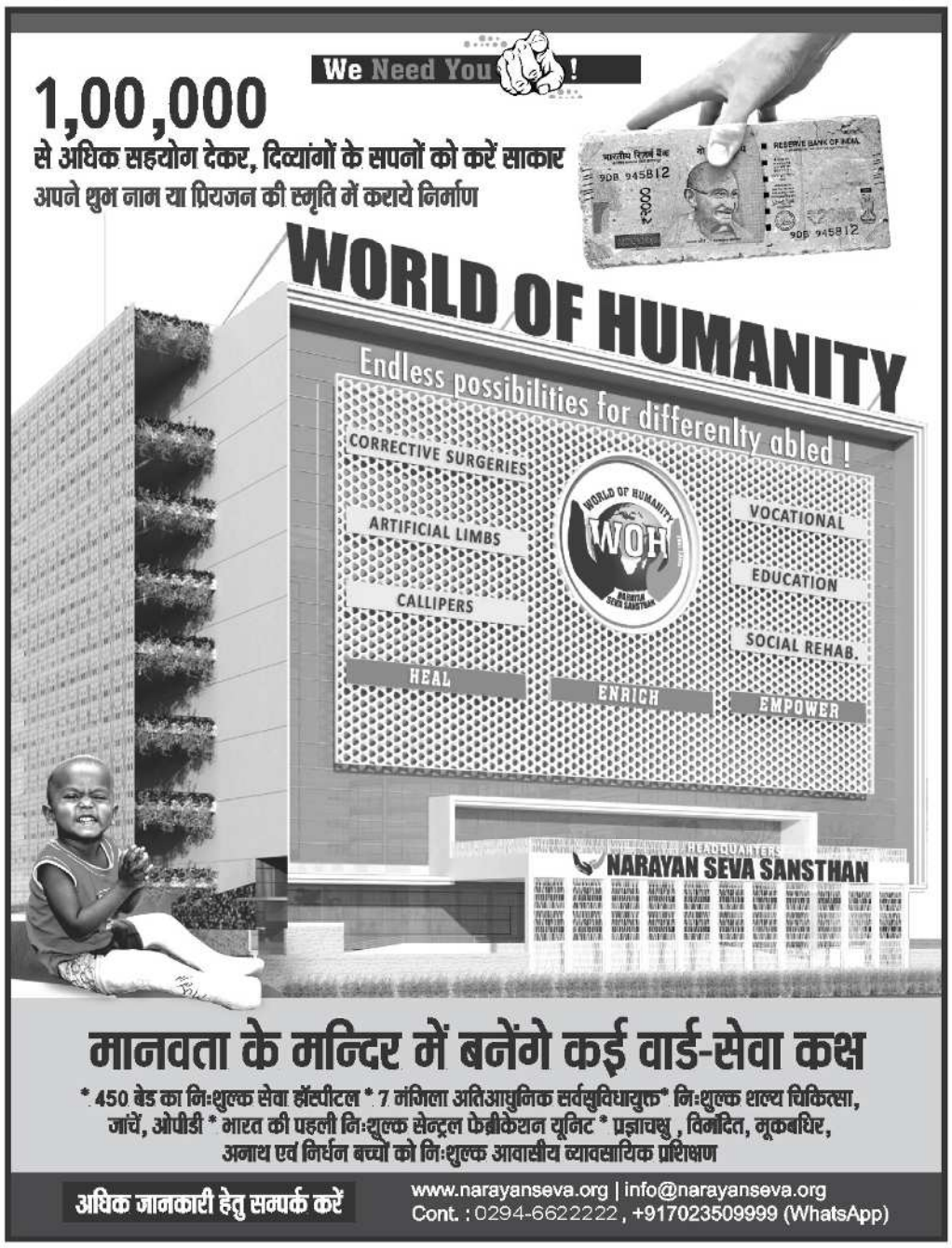

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023